''बदलते युग की परिभाषा''

सुबह के 11 बजे थे। घर का सारा काम हो चुका था। इस समय मैं घर पर अकेली ही होती हूँ। अचानक फोन की घंटी ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। दीदी का फोन था। आज वो मुझे बहुत उदास लग रही थी। जब मैंने जोर देकर उदासी का कारण पूछा तो उन्होने अपने दिल का दुख मेरे सामने खोल कर रख दिया। वह बोली कि उनकी बहू रमा जो एक स्कूल में अध्यापिका है, अपने ससुर की बरसी नहीं मनाना चाहती। जब दीदी ने बरसी की बात रमा से की तो रमा ने कहा कि पंडितों को ठूँस–ठूँस कर खिलाने और सैकड़ों रूपये की वस्तुएँ दान में देने से अच्छा तो यह है कि किसी गरीब विद्यार्थी को छात्रवृत्ति दे दी जाए या किसी अस्पताल में दान दे दिया जाए। उसकी बात दीदी को बुरी लग गई , वो बोल रही थी कि उन्होने तो बहू को बेटी ही माना था वो ऐसा क्यों कह रही है। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ इसलिए मैंने दीदी से कुछ इधर–उधर की बाते करी और फोन रख दिया।

मेरे मन में बहुत उलझन थी। मैंने अपने लिए चाय बनाई और इस विषय पर सोचने लगी। खाने की मेज पर रखे चाय के प्याले से उठती हुई भाप और मन में उमड़ता विचारों का गुबार, सब जैसे एकाकार हो रहा था। अभी 10 मिनट पहले तक सब ठीक था, पर बड़ी बहन के फोन ने सोचने पर विवश कर दिया। फोन पर बहन का बार–बार कहना कि मैंने तो बहू को बेटी ही माना तो फिर उसने मुझे बाते क्यों सुनाई?'' सुनने में तो ये हर घर में होने वाली बात है पर मेरा मन इस तर्क वितर्क में फँसा है कि हमारी बहू बेटी की तरह क्यों? बहू को बहू के रूप में प्रेम नहीं दिया जा सकता? क्या हम बार–बार बहू को बेटी मानने की कह कर अपने किसी अपराध बोध छिपा तो नहीं रहे है? या फिर यहीं बदलते युग की नई परिभाषा है ? काफी सोचने के बाद भी जब मुझे कोई उत्तर नहीं मिला तो मैंने दीदी के घर जो कि इसी शहर में है, जाने का निश्चय किया।

अगले दिन सुबह जब मैं दीदी के घर पहुँची तब रमा अपने स्कूल के किसी कार्यक्रम में दीदी को मुख्य अतिथि के रूप में चलने का अनुरोध कर रही थी। मुझे देख कर उसने मुझे भी स्कूल के कार्यक्रम में आमंत्रित किया। मैं और दीदी सहर्ष तैयार हो गये।

अगले दिन हम स्कूल पहुँचे। प्रधानाध्यापिका ने दीदी का स्वागत करते हुए कहा "आज मुझे श्रीमती विमला देवी का मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है। उन्होने अपने दिवंगत पति की स्मृति में स्कूल को 10 हजार रू0 प्रदान किये है जो जरूरतमंद छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में दिए जाऐंगे।

तालियों की गड़गड़ाहट से माहौल गूँज उठा। दीदी ने चौंक कर अश्चर्यपूर्ण नेत्रों से रमा को देखा वो मुस्करा पड़ी। छलछलाती आँखों से पुरस्कार वितरित करते हुए दीदी के चहरे से अदभुत संतोष झलक रहा था।

घर आते ही दीदी ने रमा को गले लगाकर बोला "लालची पंडितों में मुझे कभी भी तुम्हारे बाबूजी नहीं दिखे पर आज छोटे–छोटे बच्चों के भोलेपन में मुझे उनके दर्शन हुए। उनकी ऐसी बरसी कभी नहीं मनी। तुमने उन्हें अमर कर दिया।

मुझे उन दोनों को देखकर असीम संतोष की अनुभूति हो रही थी। अगर हम घर की बहू को उसका सही मान और स्थान दें तो वह बेटी से कम नही। अगर हम बहू को घर के साथ दिल में भी स्थान दें तो आधी से ज्यादा समस्याएँ स्वतः ही हल हो जाएंगी। हम सब कहते है कि यह हमारे घर की बहू है। कोई यह क्यों नहीं कहता कि यह हमारी बहू का घर है। जिस दिन ऐसा होगा, उस दिन सही मायने में बहू को बहू का अधिकार मिलेगा। यही बदलते युग की परिभाषा है।

प्रमिला माहेश्वरी
बुलन्दशहर (उ0प्र0)